DRAFT

National Education Policy- 2020

Common Minimum Syllabus for Uttarakhand State

Universities and Colleges

Four Year Undergraduate Programme-

FYUP/Honours Programme/Master in Arts

PROPOSED STRUCTURE FOR FYUP/MASTER'S

SANSKRIT SYLLABUS

W.e.f. 2025-26

DEPARTMENT OF SANSKRIT

संस्कृत विभाग

कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

पत्रांक– SAN / 01 दिनांक– 12.06.2025

सेवा में,

सङ्कायाध्यक्ष कला महोदय,
डी0एस0बी0 परिसर,
कुमाँऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखण्ड)।

विषय– अनुमोदनार्थ पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय पत्रांक–दिनांक–11.06.2025 के क्रम में संस्कृत विभाग की बी0ओ0एस0 (पाठ्यक्रम समिति की बैठक) दिनांक– 11.06.2025 को कुमाँऊ विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन में सम्पन्न की गयी जिसमें बाह्यविषय विशेषज्ञों की उपस्थिति में पाठ्यक्रम को अनुमोदनार्थ संस्तुति की गयी है।

अतः महोदय सम्पूर्ण पाठ्यक्रम वाञ्छित क्रम से सॉफ्ट कापी ई–मेल पर (deanarts@kunainital.ac.in) प्रेषित की जा रही है।

सादर

भवदीया
संयोजक पाठ्यक्र समिति /
अध्यक्ष संस्कृत विभाग
डी0एस0बी0 परिसर, नैनीताल।

DRAFT
National Education
Policy-2020
Common Minimum Syllabus for all Uttarakhand State Universities and Colleges for five Years of Higher Education
PROPOSED STRUCTURE OF UG &PG SANSKRIT SYLLABUS
2025

Syllabus checked and modified by:

S.N.	Name	Designation	Department	Affiliation
1.	DR. SOMVEER SINGHAL Mob. 9910286703 Meeting- 18,19 December- 2024	ASSOCIATE PROFESSOR	SANSKRIT, UNIVERSITY OF DELHI	UNIVERSITY OF DELHI
2.	PROF. GIRISH CHANDRA PANT Mob- 9717652577 Meeting- 27 March- 2025	PROFESSOR	SANSKRIT, JAMIYA MILLIYA SLAMIYA UNIVERSITY, DELHI	JAMIYA MILLIYA SLAMIYA UNIVERSITY, DELHI
3.	PROF. C. UPENDER RAO Mob- 9818969756 Meeting- 25 April- 2025, 2,3 MAY-2025	PROFESSOR	SANSKRIT, J.N.U. NEW DELHI	J.N.U. NEW DELHI
4.	PROF. RAJNISH MISHRA Mob- 9910066499 Meeting- 25 April- 2025, 2,3 MAY-2025	PROFESSOR	SANSKRIT, J.N.U. NEW DELHI	J.N.U. NEW DELHI
Date- 11-06-2025 Held- B.O.S. Sanskrit, Experts Name				
1.	Prof. Ramesh chandre Pandey Ex- VC Mob- 9810207063	PROFESSOR	Center University of Sanskrti	Center University New Delhi
2.	PROF. GIRISH CHANDRA PANT Mob- 9717652577	M.M.T.T.C. PROFESSOR	SANSKRIT, JAMIYA MILLIYA SLAMIYA UNIVERSITY, DELHI	JAMIYA MILLIYA SLAMIYA UNIVERSITY, DELHI
3.	Prof. Ranjan Kumar Tripathi Mob- 8527619593	PROFESSOR	Delhi University Delhi	Delhi University Delhi

Syllabus Preparation by Faculty Members				
S.N.	**Name**	**Designation**	**Department**	**Affiliation**
1.	PROF. JAYA TIWARI	PROFESSOR	CONVINER OF SANSKRIT	D.S.B. CAMPUS KUMAUN UNIVERSITY, NAINITAL
2.	PROF. SHALIMA TABASSUM	PROFESSOR	CONVINER OF SANSKRIT	SOBAN SINGH JEENA, ALMORA UNIVERSITY
3.	PROF. KAMALA PANT	PROFESSOR	H.O.D. SANSKRIT	MBPG COLLEGE HALDWANI
4.	PROF. POONAM PATHAK	PROFESSOR	CONVINER OF SANSKRIT	SHRIDEV SUMANA UNIVERSITY, RISHIKESH
5.	DR. MAYA SHUKLA	ASSOCIATE PROFESSOR	H.O.D. SANSKRIT	P.G. COLLEGE, RAMGARH
6.	DR. LAJJA BHATT	ASSOCIATE PROFESSOR	SANSKRIT	D.S.B. CAMPUS KUMAUN UNIVERSITY, NAINITAL
7.	DR. NEETA ARYA	ASSISTANT PROFESSOR	SANSKRIT	D.S.B. CAMPUS KUMAUN UNIVERSITY, NAINITAL
8.	DR. NEERAJ JOSHI	ASSISTANT PROFESSOR	SANSKRIT	UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY, HALDWANI
9.	DR. PRADEEP KUMAR	ASSISTANT PROFESSOR (CONTRECET)	SANSKRIT	D.S.B. CAMPUS KUMAUN UNIVERSITY, NAINITAL
10.	DR. SHUSHMA JOSHI	ASSISTANT PROFESSOR (CONTRECET)	SANSKRIT	D.S.B. CAMPUS KUMAUN UNIVERSITY, NAINITAL

………………………………………………………………………..……………0…………………………..……………………..……………………………

<table>
<tr><th colspan="10">UG Fourth Year&PG First Year</th></tr>
<tr><td rowspan="10">IV</td><td rowspan="8">VII</td><td>DSC / Credit 4</td><td>DSE / Credit 4</td><td>DSE / Credit 4</td><td>DSE / Credit 4</td><td>Dissertation /6 Credit</td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td rowspan="7">वैदिकसाहित्य</td><td>संस्कृत–रूपक</td><td>सांख्य एवं न्यायदर्शन</td><td>व्याकरण, पालि एव प्राकृत अथवा संस्कृत शोधप्रविधि</td><td>Dissertation on Major
OR
Dissertation on Minor
OR
Academic Project/Entrepreneurship</td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td colspan="3">OR</td><td rowspan="6">संस्कृतनाट्य एवं चलचित्र
अथवा
लोकसंस्कृति में संस्कृत का प्रभाव
अथवा
संस्कृतसाहित्य में आचार मीमांसा</td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>DSE / Credit 4</td><td>DSE / Credit 4</td><td>GE / Credit 4</td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>संस्कृत–रूपक</td><td>सांख्य एवं न्यायदर्शन</td><td>अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवंसाहित्यकार</td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td colspan="3">OR</td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>DSE / Credit 4</td><td>GE / Credit 4</td><td>GE / Credit 4</td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>संस्कृत–रूपक</td><td>अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवंसाहित्यकार</td><td>आर्षकाव्य–रामायण</td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td rowspan="2">VIII</td><td>DSC / Credit 4</td><td>DSE / Credit 4</td><td>DSE / Credit 4</td><td>DSE / Credit 4</td><td>Dissertation /6 Credit</td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>काव्य एवं भारतीयसंस्कृति</td><td>वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)</td><td>वाक्यपदीय एवं भाषाविज्ञान</td><td>मीमांसा एवंवेदान्त</td><td>Dissertation on Major
OR
Dissertation on Minor
OR
Academic Project/Entrepreneur</td><td></td><td></td><td></td></tr>
</table>

						ship			
			OR			अथर्ववेद एवं आयुर्वेद चिकित्सा **अथवा** संस्कृतसाहित्य में वर्णित समाज **अथवा** भारतीय शिक्षा व्यवस्था : प्रासंगिकता			
			DSE / Credit 4	**DSE / Credit 4**	**GE / Credit 4**				
			वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)	वाक्यपदीय एवं भाषाविज्ञान	उत्तराखण्ड़ के संस्कृतसाहित्यकार				
			OR						
			DSE / Credit 4	**GE / Credit 4**	**GE / Credit 4**				
			वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)	उत्तराखण्ड़ के संस्कृतसाहित्यकार	आर्षकाव्य–महाभारत				

PG Diploma/ Honours in the Core Subject-SANSKRIT					
Fourth Year	VII	DSC 7	वैदिकसाहित्य	Theory	4
	Group-I	DSE 5	संस्कृत–रूपक	Theory	4
		DSE 6	सांख्य एवं न्यायदर्शन	Theory	4
		DSE 7	व्याकरण, पालि एवं प्राकृत **अथवा**संस्कृत शोधप्रविधि	Theory	4
	Group-II	DSE 5	संस्कृत–रूपक	Theory	4
		DSE 6	सांख्य एवं न्यायदर्शन	Theory	4
		GE 7	अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवंसाहित्यकार	Theory	4
	Group-III	DSE 5	संस्कृत–रूपक	Theory	4
		GE 7	अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवंसाहित्यकार	Theory	4
		GE 8	आर्षकाव्य–रामायण	Theory	4
		Dissertation	Dissertation on Major- संस्कृतनाट्य एवं भारतीय चलचित्र	Theory	6
			अथवा		
			Dissertation on Minor- लोकसंस्कृति में संस्कृत का प्रभाव	Theory	
			अथवा		
			Academic Project/ Entrepreneurship- संस्कृतसाहित्य में आचार मीमांसा	Theory	
	VIII	DSC 8	काव्य एवं भारतीयसंस्कृति	Theory	4

	Group I	DSE 8	वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)	Theory	4
		DSE 9	वाक्यपदीय एवं भाषाविज्ञान	Theory	4
		DSE 10	मीमांसा एवंवेदान्त		4
	Group II	DSE 8	वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)	Theory	4
		DSE 9	वाक्यपदीय एवं भाषाविज्ञान	Theory	4
		GE 9	उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्यकार	Theory	4
	Group III	DSE 8	वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)	Theory	4
		GE 9	उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्यकार	Theory	4
		GE 10	आर्षकाव्य–महाभारत	Theory	4
		Dissertation	Dissertation on Major- अथर्ववेद एवं आयुर्वेद चिकित्सा	Theory	6
			अथवा		
			Dissertation on Minor- संस्कृतसाहित्य में वर्णित समाज	Theory	
			अथवा		
			Academic Project/ Entrepreneurship- भारतीय शिक्षा व्यवस्था : प्रासंगिकता	Theory	

COURSE INTRODUCTION

Programme outcomes (POs)	
PO1	साहित्य मानव संवेदना की अभिव्यक्ति का प्रमुख स्त्रोत रहा है। कलाओं में यह सम्पूर्ण कला है। साहित्य– समाज का दर्पण है। स्नातक उपाधि में इस विषय के चयन से विद्यार्थी वर्ग साहित्य के अध्ययन से तत्कालीन समाज एवं संस्कृति से अवगत होंगें।
PO2	सहज एवं स्वाभाविक रूप से भाषा–कौशल प्राप्त कर उनमें प्रभावशाली अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न होगी।
PO3	आत्मविश्वास से युक्त एवं नेतृत्व क्षमता प्राप्त होगी।
PO4	मूल्यपरक व्यक्तित्व से युक्त होकर भारतीयता के बोध के साथ वैश्विक नागरिक के रूप में भावी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे।
PO5	विद्यार्थी संघ लोक सेवा आयोग एवं प्रादेशिक लोक सेवा आयोगों के परीक्षा पाठ्यक्रम में सम्मिलित संस्कृतसाहित्य की आधार एवं अनिवार्य शिक्षा प्राप्त कर सकेगें।
PO6	विद्यार्थियों को लेखन, वाचन एवं अध्ययन की दृष्टि से भाषागत दक्षता प्राप्त हो सकेगी।
PO7	व्याकरण के अध्ययन से उच्चारण शुद्धता प्राप्त होगी जिससे ग्रन्थों के पठन–पाठन में दक्षता मिलेगी।
PO8	भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत विद्यार्थी हमारे प्राचीन साहित्य एवं नैतिक मूल्यों से अवगत होंगे।
PO9	भारतीय दर्शन के अन्तर्गत आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों से विद्यार्थी परिचित होंगे।
PO10	संस्कृत शब्द का अर्थ है संस्कार की हुई, परिमार्जित एवं शुद्धता से परिपूर्ण अतः संस्कृत भाषा के अध्ययन से साहित्यिक भाषा का सम्यक बोध हो सकेगा।
PO11	नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से मूल्यवान् व्यक्तित्वधारी होकर भारतीयता के बोध के साथ वैश्विक नागरिक के रूप में भावी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे।
Programme specific outcomes (PSOs)	
PSO1	सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा के रूप में संस्कृत भाषा के प्राचीन महत्व एवं उसकी वर्तमान प्रासंगिकता को जानने–समझने योग्य होंगे।
PSO2	संस्कृतसाहित्य की विभिन्न विधाओं (गद्य, पद्य, नाटक, व्याकरण, दर्शन, कथा इत्यादि) के सुपरिचित माध्यम से अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा।
PSO3	धर्म–दर्शन, आचार–व्यवहार, नीतिशास्त्र एवं भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को जानकर उत्तम चरित्रवान् एवं कुशल नागरिक बनेगें।
PSO4	समसामयिक समस्याओं के समाधान के रूप में संस्कृत साहित्य में निबद्ध सर्वाङ्गीणता के प्रति शोधपरक दृष्टि का विकास होगा।
PSO5	संस्कृतभाषा अध्ययन, सम्भाषण, से जीविकोपार्जन के योग्य हो जायेगें।
PSO6	संस्कृतसाहित्य, भारतीयसंस्कृति ,भारतीय दर्शन, संस्कृत व्याकरण आदि का बोध हो सकेगा।
Course Outcomes: (COs)	
CO1	विद्यार्थी स्नातकउपाधि पाठ्यक्रम के अन्तर्गत मुख्य विषय के रूप मे साहित्यशास्त्र, दर्शन एवं व्याकरण का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करेगें।
CO2	पाठ्यक्रम के अन्तर्गत, उपनिषद् पुराण एवं स्तोत्रकाव्य से परिचित होगें।
CO3	स्नातक उपाधि के पाठ्यक्रम में विद्यार्थी वैदिकवाङ्मय ,एवं धर्मशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करेंगें।
CO4	पाठ्यक्रम के अन्तर्गत भारतीय ज्ञानपरम्परा के अन्तर्गत भारतीय दर्शन, एवं नीतिकथाओं के अध्ययन से विद्यार्थी का चारित्रिक उन्नयन होगा।

CO5	पाठ्यक्रम के अन्तर्गत स्मृति साहित्य का अध्ययन कर उसके महत्व से परिचित होगें।
CO6	कौटिलीय अर्थशास्त्र के अध्ययन से विद्यार्थी परिचित होगें।इस प्रकार धर्म–दर्शन, आचार–व्यवहार, नीतिशास्त्र के मूलतत्त्वों को जानकर उत्तम चरित्रवान् मानव एवं कुशल नागरिक बनेंगे। प्रस्तावित विषय–संस्कृतसाहित्य की विविध विधाओं एवं वैदिकवाङ्मय पर आधारित विषय पर लघुशोधकार्य से विद्यार्थियों की शोधपरक बुद्धि का विकास होगा। सर्वेक्षण, अन्वेषण एवं मनन–चिन्तन से उनका बौद्धिकस्तर बढेगा साथ ही समसामयिक समस्या के निदान का मार्ग भी प्रशस्त होगा।
CO7	संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं एवं संस्कृतसम्भाषण से विद्यार्थियों की वाक्शक्ति का विकास होगा।
CO8	संस्कृत महाकाव्य के अध्ययन से उनमें निहित महान् चरित्रों का अध्ययन कर आत्मसात् करेंगे एवं संस्कृत महाकाव्य मे प्रयुक्त रस, छन्द, अलंकारों के माध्यम से काव्यशास्त्रीय तत्त्वों को समझने की क्षमता प्राप्त करेंगे।
CO9	विद्यार्थी श्रीमद्भगवद्गीता के अन्तर्गत प्रतिपाद्य विषय के अध्ययन से कर्मसिद्धान्त एवं अध्यात्मज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
CO10	उपनिषद्, पुराण एवं स्तोत्रकाव्य के अध्ययन से विद्यार्थी सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना से परिचित होंगे।

……………………………………………………………………0……………………………………………………………………

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Course	4	3	1	0		Nil

PG Diploma/ Honours in the Core Subject-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester: VII Paper- DSC
Course Code: DSC 7	Course Title: **वैदिकसाहित्य**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. वेद, वैदिकसंहिता, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यकग्रन्थ, उपनिषद्,वेदाङ्ग एवं वैदिकसाहित्य की पृष्ठभूमि में रचित ग्रन्थों से सुपरिचित होंगे।
2. वैदिक सूक्तों के महत्त्व से सुपरिचित होंगे।
3. वैदिक साहित्य के माध्यम से नैतिक एवं राष्ट्रिय भावना से अभिभूत होंगे।
4. वैदिक वाङ्गमय एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

Unit	**Topic- वेद से निम्नलिखित सूक्त–**
Unit I	इन्द्र–2/12, सूर्य– 1/115, अग्नि– 1/143
Unit II	उषस्– 3/61, पुरुष सूक्त– 10/90
Unit III	नासदीय– 10/129, हिरण्यगर्भ– 10/121 विश्वामित्र–नदी संवाद–3/33
Unit IV	यजुर्वेद– योगक्षेम–22/22, अथर्ववेद–राष्ट्राभिवर्धन–1/29
Unit V	वैदिक साहित्य का इतिहास

Suggested Reading:

1. द न्यू वैदिक सलेक्शनभाग– 01 तथा भाग–02– सम्पादक– ब्रजबिहारी चौबे (तैलंग एवं चौबे)।
2. ऋक्सूक्त संग्रह–डॉ0 हरिदत्त शास्त्री एवं डॉ0 कृष्णकुमार–प्रकाशन– साहित्य भण्डार सुभाष बाजार मेरठ– 250002।
3- Hymns of the Rigvdea- Peterson .
4. वैदिकसाहित्य का इतिहास–डॉ0 कृष्णकुमार ,साहित्य भण्डार मेरठ।

5. वैदिकसाहित्य का इतिहास–गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर एवं पं0 राजेश्वर (राजू) केशवशास्त्री मुसलगाँवकर प्रकाशन–चौखम्बा संस्कृत, वाराणसी
6. वैदिकसाहित्य का इतिहास–डॉ0कर्णसिंह,साहित्य भण्डार मेरठ।
7. वैदिकसाहित्य का इतिहास–वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान,दिल्ली।
8. ऋक् सूक्त मंजूषा–प्रो0 महावीर अग्रवाल, सत्यं प्रकाशन, नई दिल्ली।

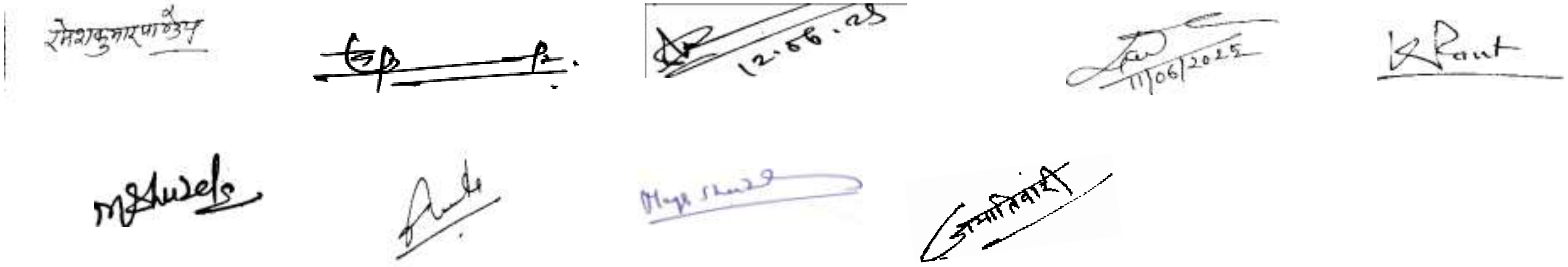

Group- I

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Electives	4	3	1	0		Nil

PG Diploma/ Honours in the Core Subject-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester:VII Paper-DSE II
Course Code: DSE 5	Course Title:**संस्कृत–रूपक**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. सस्कृत रूपक साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर रूपकों के भेदों से सुपरिचित हो सकेंगे।
2. रूपक साहित्य एवं साहित्यकारों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष को समझ पायेंगे।
3. रूपक साहित्य के ज्ञान से कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होगा।

Unit	Topic
Unit I	उत्तररामचरितम्– भवभूति– प्रथम से तृतीय अंक पर्यन्त।
Unit II	उत्तररामचरितम्– भवभूति– चतुर्थ से समाप्ति पर्यन्त।
Unit III	रत्नावली– हर्षदेवकृत– सम्पूर्ण।
Unit VI	सम्बन्धित ग्रन्थों का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन।
Unit V	संस्कृत रूपककारकापरिचय– भास, कालिदास, हर्ष, भवभूति, शूद्रक, विशाखदत्त, भट्ट नारायण।

Suggested Reading:

1. उत्तररामचरितम्–पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
2. उत्तररामचरितम्–कृष्णकान्त शुक्ल एवं ब्रह्मानन्द शुक्ल।
3. उत्तररामचरितम् की शास्त्रीय समीक्षा–डॉ0 सत्यनारायण चौधरी।
4. भवभूति एवं उनकी नाट्यकला–डॉ0 अयोध्याप्रसाद सिंह।
5. संस्कृतकविसमीक्षा–अमर नाथ पाण्डेय, चौखम्बा ओरिएन्टल, वाराणसी।

6. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास—पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य संस्थान, 37 कचेहरी मार्ग इलाहाबाद।
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास—पद्मविभूषण डॉ0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
8. संस्कृत काव्यकार— डॉ0 हरिदत्त शास्त्री।
9. रत्नावली—हर्षदेवकृत—व्याख्याकार एवं सम्पादक डॉ0 शिवप्रसाद शास्त्री, मेरठ साहित्य भण्डार 1994।

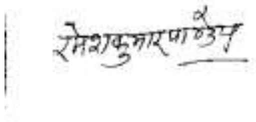

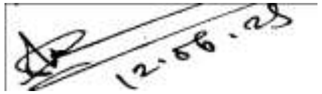
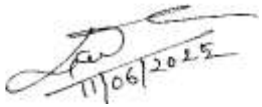
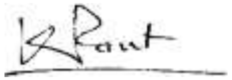

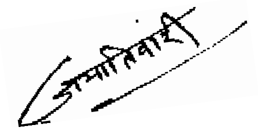

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Electives	4	3	1	0		Nil

PG Diploma/ Honours in the Core Subject-SANSKRIT			
Programme:- SANSKRIT		Year: IV	Semester:VII Paper-DSE III
Course Code: DSE 6	Course Title:**सांख्य एवं न्यायदर्शन**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. भारतीय दार्शनिक तत्त्वों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।
2. सांख्य दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों को जानकर प्रमेय पदार्थो से परिचित होंगे।
3. न्यायशास्त्र के प्राचीन एवं वैज्ञानिक ज्ञान से लाभान्वित होंगे।
4. न्यायदर्शन से प्राचीन एवं आधुनिक न्याय व्यवस्था से परिचित होंगे।

Unit	Topic
Unit I	सांख्य एवं न्यायदर्शन परम्परा एवं सांख्यकारिका–ईश्वर कृष्ण कृत (01–35 वीं कारिका पर्यन्त)
Unit II	सांख्यकारिका–ईश्वर कृष्ण कृत (36–72वीं कारिका पर्यन्त)
Unit III	तर्कभाषा–प्रारम्भ से प्रत्यक्ष पर्यन्त।
Unit IV	तर्कभाषा–अनुमान से प्रामाण्यवाद पर्यन्त।
Unit V	तर्कभाषा–प्रमेय निरूपण।

Suggested Reading:

1. सांख्यकारिका–ढुण्ढिराज शास्त्री।
2. सांख्यकारिका–डॉ0 रमाशंकर तिवारी।
3. सांख्यकारिका–जगन्नाथ शास्त्री।
4. सांख्यकारिका–डॉ0 रामकृष्ण आचार्य।
5. तर्कभाषा–आचार्य विश्वेश्वर पाण्डे, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
6. तर्कभाषा–श्रीनिवास शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी।
7. तर्कभाषा–आचार्य बद्रीनाथ शुक्ल।
8. भारतीय दर्शन–उमेश मिश्र, लखनऊ हिन्दी समिति ग्रन्थमाला।

9. Indian Philosophy– S.Das Gupta ।
10. तर्क भाषा–केशवशास्त्री मुसलगाँवकर प्रकाशन– चौखम्बा संस्कृत, वाराणसी।

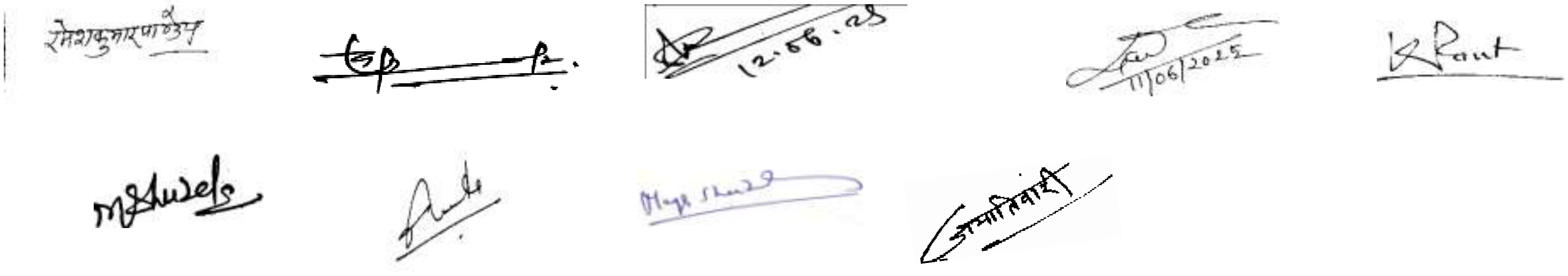

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Electives	4	3	1	0		Nil

PG Diploma/ Honours in the Core Subject-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester:VII Paper-DSE IV
Course Code: DSE 7	Course Title: **व्याकरण, पालि एवं प्राकृत**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. व्याकरण अध्ययन से विद्यार्थी उच्चारण कौशल में निपुण होंगे।
2. संस्कृत व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित होंगे।
3. कारक एवं समास का विशिष्ट ज्ञान एवं उनके अनुपयोग का कौशल विकसित होगा।

Unit	Topic
Unit I	वैयाकरणसि़द्धान्तकौमुदी–कारक प्रकरण–कर्त्ता, कर्म एवं करण।
Unit II	वैयाकरणसि़द्धान्तकौमुदी–कारक प्रकरण–सम्प्रदान, अपादान, एवं अधिकरण।
Unit III	समास प्रकरण–लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर।
Unit VI	पालीभाषा परिचय एवं धम्मपद–दशवग्गपर्यन्त (व्याख्या–टिप्पणी)।
Unit V	प्राकृत भाषा उद्‌गम–विकास एवं ग्रन्थपरिचय।

Suggested Reading:

1. सिद्धान्त कौमुदी–भट्‌टोजिदीक्षित, व्याख्याकार–श्री गोपालदत्त पाण्डेय।
2. एम0 ए0 संस्कृत व्याकरण–श्रीनिवास शास्त्री।
3. धम्मपद–सम्पादक, कन्छेदीलाल गुप्त।
4. पालि साहित्य का इतिहास–डॉ0 भरतसिंह उपाध्याय।
5. लघुसिद्धान्तकौमुदी–श्रीधरानन्द शास्त्री,चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी।
6. तिङन्त प्रकरणम्–डॉ0 लज्जा भट्ट
7. अभिनव प्राकृत प्रकाश–नेमिचन्द्र शास्त्री
8. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी,विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी।

अथवा

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Electives	4	3	1	0		Nil

PG Diploma/ Honours in the Core Subject-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester:VII Paper- DSE IV
Course Code: DSE 7	Course Title: **संस्कृत–शोधप्रविधि**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1– विद्यार्थी शोधप्रविधि के अध्ययन से शोध के क्षेत्र में प्रवेश करेगें।

2– विद्यार्थी किसी भी विषय को लेकर शोधकार्य कर सकेगें।

3– शोधकार्य में किसी भी प्रविधि के माध्यम से शोधकार्य को पूर्ण करने में सफल होगें।

Unit	**Topic**
Unit I	शोध का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप।
Unit II	शोध के प्रकार एवं शोध के मुख्यतत्त्व एवं महत्त्व।
Unit III	शोधप्रविधि की परिभाषा, प्रकार एवं महत्त्व।
Unit VI	शोधप्रविधि का निर्धारण एवं विशेषाताऐं
Unit V	साहित्यिक शोधः अर्थ स्वरूप, तत्त्व,पद्धतियॉ एवं उद्देश्य।

Suggested Reading:

1– रिसर्च मैथ्योलॉजी– डॉ0 आर0एन0 त्रिवेदी, डॉ0 डी0पी0 शुक्ला।

2– रिसर्च मैथ्योलॉजी– डॉ0 बी0 एम0 जैन।

3– शोधप्रविधि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।

4– अनुसन्धान का स्वरूप सम्पादिका– डॉ0 सावित्री सिन्हा, हिन्दी अनुसन्धान परिषद्, दिल्ली वि0वि0 आत्माराम एंड संस प्रकाशन।

5– अनुसन्धान की प्रक्रिया– डॉ0 सावित्री सिन्हा, डॉ0 विजयेन्द्र स्नातक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

अथवा

Group- II

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Electives	4	3	1	0		Nil

PG Diploma/ Honours in the Core Subject-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester:VII Paper- DSE II
Course Code: DSE 5	Course Title: **संस्कृत–रूपक**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि	
	1. सस्कृत रूपक साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर रूपकों के भेदों से सुपरिचित हो सकेंगे। 2. रूपक साहित्य एवं साहित्यकारों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष को समझ पायेंगे। 3. रूपक साहित्य के ज्ञान से कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होगा।
Unit	**Topic**
Unit I	उत्तररामचरितम्– भवभूति– प्रथम से तृतीय अंक पर्यन्त।
Unit II	उत्तररामचरितम्– भवभूति– चतुर्थ से समाप्ति पर्यन्त।
Unit III	रत्नावली– हर्षदेवकृत– सम्पूर्ण।
Unit VI	सम्बन्धित ग्रन्थों का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन।
Unit V	संस्कृत रूपककारका परिचय– भास, कालिदास, हर्ष, भवभूति, शूद्रक, विशाखदत्त, भट्ट नारायण।

Suggested Reading:

1. उत्तररामचरितम्–पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
2. उत्तररामचरितम्–कृष्णकान्त शुक्ल एवं ब्रह्मानन्द शुक्ल।
3. उत्तररामचरितम् की शास्त्रीय समीक्षा–डॉ0 सत्यनारायण चौधरी।
4. भवभूति एवं उनकी नाट्यकला–डॉ0 अयोध्याप्रसाद सिंह।
5. संस्कृतकविसमीक्षा–अमर नाथ पाण्डेय, चौखम्बा ओरिएन्टल, वाराणसी।
6. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास– पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य संस्थान, 37 कचेहरी मार्ग इलाहाबाद।
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास– पद्मविभूषण डॉ0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।

8. संस्कृत काव्यकार–डॉ0 हरिदत्त शास्त्री।
9. रत्नावली–हर्षदेवकृत–व्याख्याकार एवं सम्पादक डॉ0 शिवप्रसाद शास्त्री, मेरठ साहित्य भण्डार 1994।

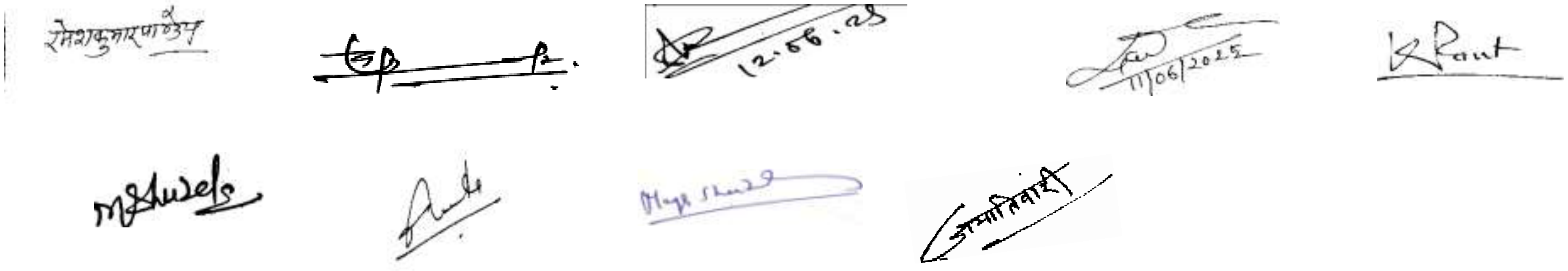

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Electives	4	3	1	0		Nil

PG Diploma/ Honours in the Core Subject-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester:VII Paper- DSE III
Course Code: DSE 6	Course Title: **सांख्य एवं न्यायदर्शन**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. भारतीय दार्शनिक तत्त्वों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।
2. सांख्यदर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों को जानकर प्रमेय पदार्थो से परिचित होंगे।
3. न्यायशास्त्र के प्राचीन एवं वैज्ञानिक ज्ञान से लाभान्वित होंगे।
4. न्यायदर्शन से प्राचीन एवं आधुनिक न्याय व्यवस्था से परिचित होंगे।

Unit	**Topic**
Unit I	सांख्यकारिका–ईश्वरकृष्ण कृत (01–35 वीं कारिका पर्यन्त)
Unit II	सांख्यकारिका–ईश्वरकृष्ण कृत (36–72 वीं कारिका पर्यन्त)
Unit III	तर्कभाषा–प्रारम्भ से प्रत्यक्ष पर्यन्त।
Unit IV	तर्कभाषा–अनुमान से प्रामाण्यवाद पर्यन्त।
Unit V	तर्कभाषा–प्रमेय निरूपण, सांख्य एवं न्यायदर्शन का इतिहास।

Suggested Reading:

1. सांख्यकारिका–ढुण्ढिराज शास्त्री।
2. सांख्यकारिका–डॉ0 रमाशंकर तिवारी।
3. सांख्यकारिका–जगन्नाथ शास्त्री।
4. सांख्यकारिका–डॉ0 रामकृष्ण आचार्य।
5. तर्कभाषा–आचार्य विश्वेश्वर पाण्डे, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
6. तर्कभाषा–श्रीनिवास शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी।
7. तर्कभाषा–आचार्य बद्रीनाथ शुक्ल।

8. भारतीय दर्शन–उमेश मिश्र, लखनऊ हिन्दी समिति ग्रन्थमाला।
9. Indian Philosophy– S.Das Gupta ।

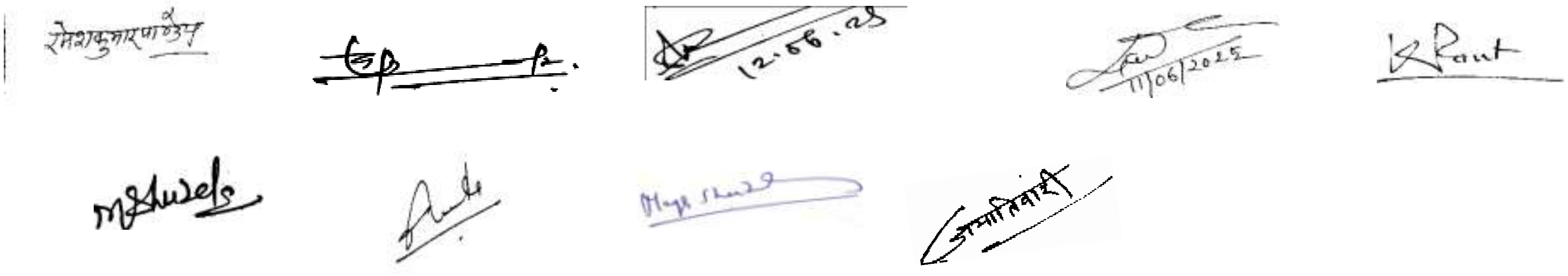

Group II

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
General Electives	4	3	1	0		Nil

PG Diploma/ Honours in the Core Subject-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester: VII Paper- GE II
Course Code: GE 7	Course Title:**अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवं साहित्यकार**	

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य से सुपरिचित होंगे।
2. आधुनिक संस्कृतसाहित्यकारों से सुपरिचित होंगे।
3. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य के विविध आयामों से परिचित होंगे।
4. अर्वाचीन पत्र–पत्रिकाओं से सुपरिचित होंगे।
5. उत्तराखण्ड के प्रमुख संस्कृत साहित्य एवं साहित्यकारों से परिचित होंगे।

Unit	Topic
Unit I	अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य का इतिहास–उन्नीसवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी तक।
Unit II	अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य के विविध आयाम एवं अर्वाचीन काव्यलक्षण–ग्रन्थों का परिचय।
Unit III	अर्वाचीन प्रमुख संस्कृतसाहित्यकार एवं उनकी रचनाएँ– पं0 अम्बिकादत्त व्यास, आचार्यविश्वेश्वर पाण्डेय, पण्डिता क्षमाराव, प्रो0 सत्यव्रत शास्त्री, डॉ0ब्रह्मानन्द शुक्ल, श्रीधर भास्कर वर्णेकर, प्रो0 हरिनारायण दीक्षित, डॉ0 मथुरा प्रसाद दीक्षित, प्रो0 हरिदत्त शर्मा, डॉ0 राधेश्याम गंगवार।
Unit IV	अर्वाचीन प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं का परिचय– दूर्वा, सागरिका, अजस्रा, अर्वाचीनसंस्कृतम्, संस्कृतमञ्जरी, शोधभारती, सारस्वतीसुषमा, वैदिक वाग्ज्योति, वाक्, हरिप्रभा।

Suggested Reading:

1. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास–पद्मभूषणपं0 बलदेव उपाध्याय,उ0 प्र0 सं0 सं0 लखनऊ।
2. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास–सप्तम खण्ड–सम्पादक डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
3. आधुनिक संस्कृत नाटक–रामजी उपाध्याय।
4. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. काव्यालंकारकारिका–प्रोफेसर रेवाप्रसाद द्विवेदी।
6. साहित्यविमर्श–प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी,शिवेश प्रकाशन इलाहाबाद।
7. संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास–प्रो0 राधबल्लभ त्रिपाठी,सम्पूर्णानन्द संस्कृतविश्वविद्यालय,वाराणसी।

8. विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।
9. अभिराजयशोभूषणम्–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. आधुनिक संस्कृत साहित्य संचयन–डॉ0 गिरीश चन्द्र पन्त– विद्यानिधि प्रकाशन दिल्ली।
11. Sanskrita Sāhitya Vaibhavam (Edited), Prof. C. Upendr Rao, Published by VIdyanidhi Prakashan Delhi, 2007.
12.Satyavrat sāhitya sāmīkshā (a critique on Satyavrat Shastri‟s writings), edited,), Prof. C. Upendr Rao, Published by Eastern book linkers, New Delhi. 2012.
13. Vāṅgmayavallarī (Research article in Sanskrit),), Prof. C. Upendr Rao, Published by Eastern Book Linkers, Darya Gunj, Delhi, 2008.

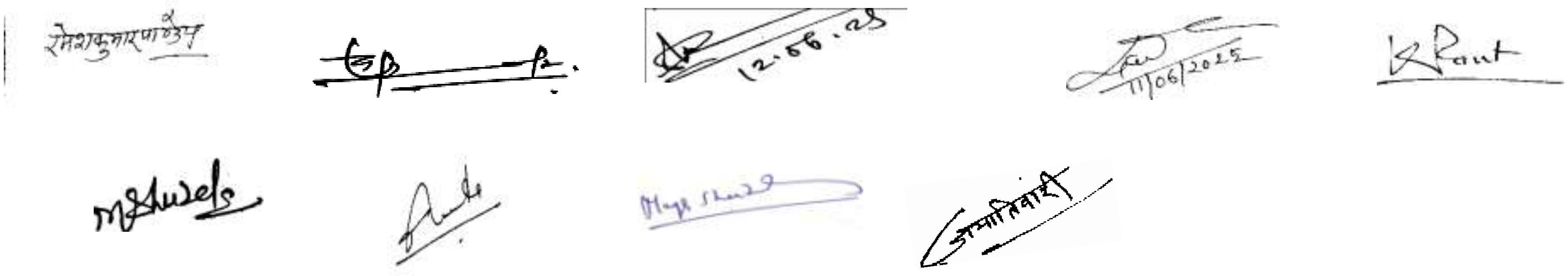

अथवा

Group- III

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Electives	4	3	1	0		Nil

PG Diploma/ Honours in the Core Subject-SANSKRIT			
Programme:- SANSKRIT		Year: IV	Semester:VII Paper- DSE II
Course Code: DSE 5	Course Title: **संस्कृत–रूपक**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. सस्कृत रूपक साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर रूपकों के भेदों से सुपरिचित हो सकेंगे।
2. रूपक साहित्य एवं साहित्यकारों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष को समझ पायेंगे।
3. रूपक साहित्य के ज्ञान से कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होगा।

Unit	Topic
Unit I	उत्तररामचरितम्– भवभूति– प्रथम से तृतीय अंक पर्यन्त।
Unit II	उत्तररामचरितम्– भवभूति– चतुर्थ से समाप्ति पर्यन्त।
Unit III	रत्नावली– हर्षदेवकृत– सम्पूर्ण।
Unit VI	सम्बन्धित ग्रन्थों का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन।
Unit V	संस्कृत रूपककार का परिचय– भास, कालिदास, हर्ष, भवभूति, शूद्रक, विशाखदत्त, भट्ट नारायण।

Suggested Reading:

1. उत्तररामचरितम्–पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
2. उत्तररामचरितम्–कृष्णकान्त शुक्ल एवं ब्रह्मानन्द शुक्ल।
3. उत्तररामचरितम् की शास्त्रीय समीक्षा–डॉ0 सत्यनारायण चौधरी।
4. भवभूति एवं उनकी नाट्यकला–डॉ0 अयोध्याप्रसाद सिंह।
5. संस्कृतकविसमीक्षा–अमर नाथ पाण्डेय, चौखम्बा ओरिएन्टल, वाराणसी।

6. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास—पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य संस्थान, 37 कचेहरी मार्ग इलाहाबाद।
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास—पद्मविभूषण डॉ0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
8. संस्कृत काव्यकार—डॉ0 हरिदत्त शास्त्री।
9. रत्नावली—हर्षदेवकृत—व्याख्याकार एवं सम्पादक डॉ0 शिवप्रसाद शास्त्री, मेरठ साहित्य भण्डार 1994।

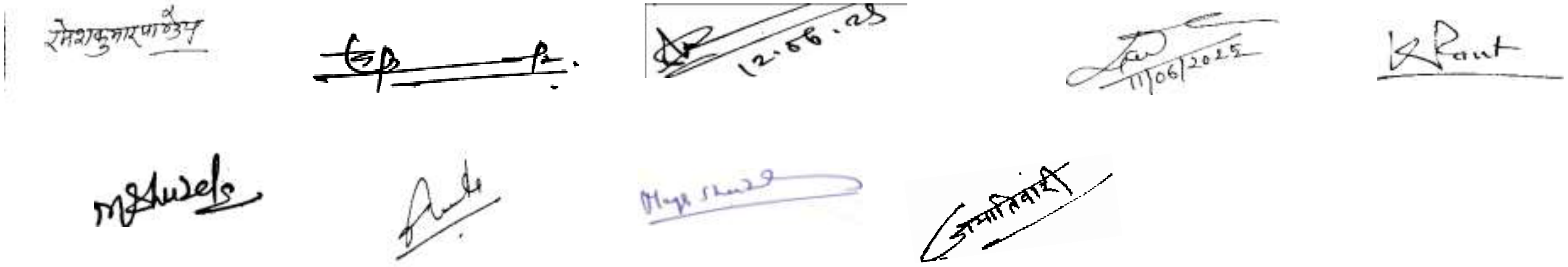

अथवा

Group- III

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
General Electives	4	3	1	0		Nil

PG Diploma/ Honours in the Core Subject-SANSKRIT			
Programme:- SANSKRIT		Year: IV	Semester: VII Paper- GE II
Course Code: GE 7	Course Title:**अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य का इतिहास**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य से सुपरिचित होंगे।
2. आधुनिक संस्कृतसाहित्यकारों से सुपरिचित होंगे।
3. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य के विविध आयामों से परिचित होंगे।
4. अर्वाचीन पत्र–पत्रिकाओं से सुपरिचित होंगे।
5. उत्तराखण्ड के प्रमुख संस्कृत साहित्य एवं साहित्यकारों से परिचित होंगे।

Unit	**Topic**
Unit I	अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य का इतिहास–उन्नीसवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी तक।
Unit II	प्रमुख आधुनिक संस्कृत महाकाव्य, आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रमुख नवीन विधाएँ।
Unit III	अर्वाचीन प्रमुख संस्कृतसाहित्यकार– पं0 अम्बिकादत्त व्यास, आचार्यविश्वेश्वर पाण्डेय, पण्डिता क्षमाराव, प्रो0 सत्यव्रत शास्त्री, डॉ0ब्रह्मानन्द शुक्ल, श्रीधर भास्कर वर्णेकर, प्रो0 हरिनारायण दीक्षित, मथुरा प्रसाद दीक्षित, अभिराज राजेन्द्र मिश्र, डॉ0 राधेश्याम गंगवार।
Unit IV	अर्वाचीन प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं का परिचय– दूर्वा, सागरिका, अजस्रा, अर्वाचीनसंस्कृतम्, संस्कृतमञ्जरी, शोधभारती, सारस्वतीसुषमा, वैदिक वाग्ज्योति, वाक्, हरिप्रभा, वाङ्मयवल्लरी।

Suggested Reading:

1. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास–पद्मभूषणपं0 बलदेव उपाध्याय।
2. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास–सप्तम खण्ड–सम्पादक डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
3. आधुनिक संस्कृत नाटक–रामजी उपाध्याय।
4. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. काव्यालंकारकारिका–प्रोफेसर रेवाप्रसाद द्विवेदी।

6. साहित्यविमर्श–प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी।
7. संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास–प्रो0 राधबल्लभ त्रिपाठी, सागर विश्वविद्यालय,सागर।
8. विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।
9. Sanskrita Sāhitya Vaibhavam (Edited), Prof. C. Upendr Rao, Published by VIdyanidhi PrakashanNew Delhi, 2007.
10. Satyavrat sāhitya sāmīkshā (a critique on Satyavrat Shastri‶s writings), edited,), Prof. C. Upendr Rao, Published by Eastern book linkers, New Delhi. 2012.
11. Vāṅgmayavallarī (Research article in Sanskrit),), Prof. C. Upendr Rao, Published by Eastern Book Linkers, Darya Gunj, Delhi, 2008.
12. आधुनिक संस्कृत साहित्य संचयन–डॉ0 गिरीश चन्द्र पन्त–विद्यानिधि प्रकाशन दिल्ली।

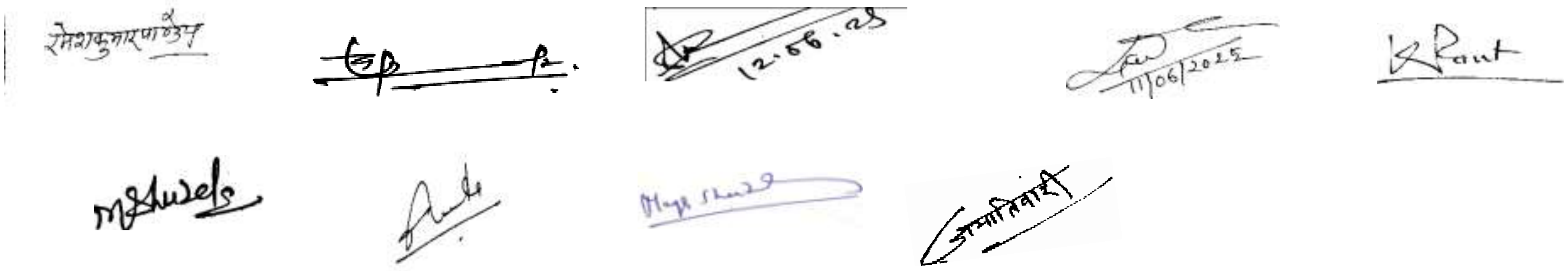

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
General Electives	4	3	1	0		Nil

PG Diploma/ Honours in the Core Subject-SANSKRIT		
Programme:-SANSKRIT	Year: IV	Semester: VII Paper- GE II
Course Code: GE 8	Course Title: **आर्षकाव्य–रामायण**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. रामायण का सामान्य परिचय, नैतिक शिक्षा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
    1. रामायण में निहित सामाजिक चेतना की शिक्षा से सुपरिचित हो सकेंगे।
    2. व्यक्ति एवं समाज की भूमिका निर्धारित करने की कला व गुण से परिचित हो सकेंगे।

Unit	Topic
Unit I	महर्षिवाल्मीकि एवं वाल्मीकिप्रणीतरामायण का परिचय।
Unit II	रामायण के सातोंकाण्डों का प्रतिपाद्य विषय।
Unit III	रामायण का माहात्म्य एवं प्रमुखपात्रों के चरित्र से प्राप्त शिक्षा।
Unit IV	रामायण के आदित्यहृदयस्तोत्र का अर्थ एवं महत्त्व।

Suggested Reading:

1. श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणम्–सम्पादकमण्डल–जी0ए0 भट्ट, पी0एल0 वैद्य, डी0आर0 मनकण्ड आदि।
2. रामकथा उत्पत्ति और विकास–कामिलबुल्केकृता।
3. श्रीमद्वाल्मीकीय कृत रामायणम्–गीता प्रेस गोरखपुर।
4. वाल्मीकि रामायण में मूल्य चेतना–डॉ0 बृजेश, नाग प्रकाशन।
5. संस्कृत वाङ्मय में श्रीराम. प्रो0 सी0 उपेन्द्र राव– ईस्टर्न बुक लिंक, नयी दिल्ली।

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
IAPC 3	6	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester: VI Paper- IAPC
Course Code: IAPC 3	Course Title: **संस्कृतनाट्य एवं भारतीयचलचित्र**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

नाट्य के सामान्य स्वरूप व प्रमुख सिद्धान्तों के अध्ययनोपरान्त नाट्यशास्त्र की शास्त्रीय समीक्षा का बोध होगा। इन सिद्धान्तों का विभिन्न भाषायी सिनेमा में अनुप्रयोग सम्बन्धी अध्ययन के द्वारा शास्त्रीय अभिनय कौशल और दक्षता का विकास होगा। इन मूल्यों के आधार पर आधुनिक फिल्में शंकराचार्य, मदर इण्डिया, गाँधी आदि की समीक्षा करने में सक्षम होंगे।

Unit	**Topic**
Unit I	संस्कृत नाट्य–परिचय एवं महत्त्व।
Unit II	भारतीय संस्कृति में सिनेमा का परिचय एवं महत्त्व।
Unit III	संस्कृत चलचित्रों की समीक्षा एवं अध्ययन।
Unit IV	संस्कृत नाट्य एवं चलचित्रों की वर्तमान युग में उपादेयता।
Unit V	संस्कृत नाट्य एवं सिनेमा के क्षेत्र में पूर्व में किये गये कार्यों का परिचय एवं लेखन।
Unit VI	शोधकार्यों का सर्वेक्षण एवं शोधप्रविधि के अनुसार शोधकार्य।

Suggested Reading:

1. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास–नाट्यशास्त्र आचार्य बलदेव उपाध्याय, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
2. त्रिपाठी, राधावल्लभ, भारतीय नाट्य : स्वरूप एवं परम्परा, सागर, मध्य प्रदेश, संस्कृत परिषद् 1998।
3. द्विवेदी हजारीप्रसाद, नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा एवं दशरूपक, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1963।
4. झा, सीताराम, नाटक और रंगमंच, पटना, बिहार, राष्ट्रभाषा परिषद्, 1982।
5. भरतमुनि, नाट्यशास्त्रम् (1–4 भाग) संपादक बाबूराम शुक्ल शास्त्री, वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, 1984।
6. त्रिपाठी, राधावल्लभ, नाट्यशास्त्र विश्वकोश (1–4 भाग), दिल्ली, प्रतिभा प्रकाशन, 1999।
7. गर्ग, लक्ष्मीनारायण भारत के लोकनाट्य, हाथरस, हाथरस संगीत कार्यालय, 1961।
8. Gupta, C.B. Indian Theatre, Varanasi, 1954
9. Mehta Tarala, Sanskrit Play Production in Ancient India. Delhi, Motilal Banarasi Dass 1999

10. द संस्कृत ड्रामा–ए0बी0 कीथ,लन्दन ऑक्सफोर्ड वि0वि0 प्रेस,इलाई हाउस 1974।
11.संस्कृत नाट्य शिल्प और रंगमंच– रामचन्द्र सरोज, राका प्रकाशन इलाहाबाद।
12. कालिदास ग्रन्थावली–चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी।
13. रंगमंच एवं नाट्यकला आधुनिक प्ररिप्रेक्ष्य–यशस्वी इण्टर प्राइवेज,दिल्ली।
14. नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा और दशरूपक–हजारीप्रसाद द्विवेदी–पृथ्वीनाथ द्विवेदी–राजकमल प्रकाशन दिल्ली।

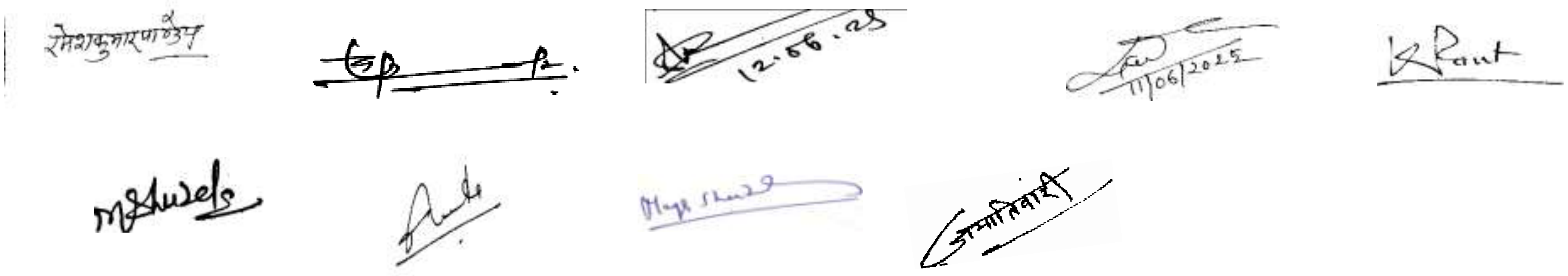

अथवा

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
IAPC	6	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme:- SANSKRIT		Year: IV	Semester: VII Paper- IAPC
Course Code: IAPC 6	Course Title: **लोकसंस्कृति में संस्कृत का प्रभाव**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी लोकसंस्कृति से परिचित होगें।
2. संस्कृतभाषा में निहित कलाओं से परिचित होगें।
3. शोध के क्षेत्र में निपुणता प्राप्त करेगें।

Unit	**Topic**
Unit I	संस्कृतभाषा का परिचय एवं महत्त्व।
Unit II	लोकसंस्कृति का परिचय, क्षेत्र एवं विशेषताऐं।
Unit III	लोकसंस्कृति में संस्कृतभाषा के प्रभाव का निष्कर्ष।
Unit IV	शोधसर्वेक्षण एवं शोधप्रविधि की उपादेयता।
Unit V	शोधकार्य की भूमिका, उद्देश्य एवं महत्त्व का अध्ययन।
Unit VI	लोकसंस्कृति में पूर्व में किये गये शोधकार्यों का सर्वेक्षण एवं संस्कृत के निहित तत्त्व।

Suggested Reading:

1. संस्कृतसाहित्य का इतिहास–पद्मविभूषण डॉ बलदेव उपाध्याय, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
2. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
3. भारतीय संस्कृति का इतिहास–डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार।

4. भारतीय संस्कृति के आधारतत्व–कृष्णकुमार।
5. हमारी प्राचीन संस्कृति–डॉ0 सत्यप्रकाश शास्त्री।
6. प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका–रामजी उपाध्याय, वाराणसी।
7. कुमाऊँ के लोकसाहित्य–डॉ0 देवसिंह पोखरिया, डी0डी0 तिवारी।
8. कुमाऊँ के संस्कार गीत (लोकगीत)–शकूनादे–सरोज उपाध्याय।

अथवा

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
IAPC	6	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester: VII Paper- IAPC
Course Code: IAPC 6	Course Title: **संस्कृतसाहित्य में आचार–मीमांसा**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1–संस्कृतसाहित्य में निहित आचार सामग्री से परिचित होगें।

2–आचार के स्वरूप एवं उसके महत्त्व से सुपरिचित होगें।

3–विद्यार्थी आचारशिक्षा से अवगत होकर अपने व्यवहार में आचार का सम्यक्पालन करते हुए प्रत्येक कार्य को निष्ठापूर्वक करेगें।

Unit	Topic
Unit I	संस्कृतसाहित्य का परिचय एवं संस्कृतसाहित्य में आचार मीमांसा।
Unit II	भारतीयसंस्कृति की विशेषाताऐं।
Unit III	आचार का स्वरूप, व्युत्पत्ति, आचार की सामग्री एवं महत्त्व।।
Unit IV	आचार के तत्त्व– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, श्रद्धा, दान का परिचय एवं महत्त्व।
Unit V	समाज में सामञ्जस्य की भावना, प्रगतिशीलजीवन एवं पारिवारिक आचरण।
Unit VI	सामाजिक आचरण, व्यावहारिक आचरण एवं वर्तमान में आचार की प्रासंगिकता

Suggested Reading:

1– ऋग्वेद में आचार सामग्री–सत्यप्रिय शास्त्री, प्रकाशक श्रीधूडमल प्रहलाद कुमार आर्य, धर्मार्थ न्यास हिन्डौन सिटी राज0।

2– मनुस्मृति–कुल्लूक भट्ट टीका सहित, चौखम्बा संस्कृत सीरीज बनारस

3– याज्ञवल्क्यस्मृति–आनन्द आश्रम संस्कृत–ग्रन्थावली, पूना।

4– रामायण का आचारदर्शन–अम्बा प्रसाद श्रीवास्तव ,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

5– आर्षकाव्य रामायण–गीताप्रेस गोरखपुर।

6– आर्षकाव्य महाभारत–गीताप्रेस गोरखपुर।

7– वेद वर्णित सदाचार एवं उसकी युग व्यवहारिकता–सुनील कुमार शाह, संस्कृति प्रकाशन वाराणसी।
8– वेदामृतम्–आचार शिक्षा–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारतीय अनुसन्धान परिषद् ज्ञानपुर भदोही।
9– वैदिकवाङ्मय के अनुसन्धेय पक्ष–प्रो0 हरीश्वर दीक्षित, प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।

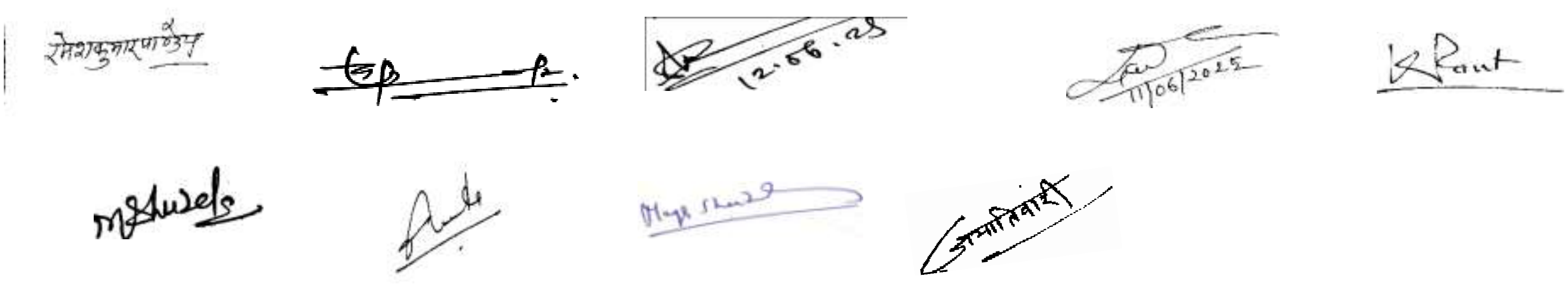

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Course	4	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester: VIII Paper- DSC
Course Code: DSC 8	Course Title: **काव्य एवं भारतीय संस्कृति**	

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. कालिदासकृत मेघदूत में प्रकृतिचित्रण एवं भौगोलिक अभिधान से सुपरिचित होंगे।
2. कवि परम्परा में कालिदास के महत्त्व से सुपरिचित हो सकेंगे।
3. श्रीहर्ष के जीवनवृत्त एवं परिचय को जान सकेंगे।
4. नल एवं दमयन्ती के गुणों से सुपरिचित होंगे।
5. भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषताओं से सुपरिचित होंगे।

Unit	**Topic**
Unit I	मेघदूतम्–कालिदासकृत (पूर्वमेघ)
Unit II	मेघदूतम्–कालिदासकृत (उत्तरमेघ)
Unit III	नैषधीयचरितम्– श्रीहर्षप्रणीत, (प्रथम सर्ग) 1–35 श्लोक
Unit IV	नैषधीयचरितम्– श्रीहर्षप्रणीत, (प्रथम सर्ग) 100–145 श्लोक
Unit V	भारतीय संस्कृति– सभ्यता एवं संस्कृति की परिभाषा एवं स्वरूप, भारतीयसंस्कृति की मुख्य विशेषताएँ, वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, संस्कार, प्राचीन भारत में नारी, प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली एवं शिक्षण संस्थान।

Suggested Reading:

1. मेघदूतम्–संसार चन्द्र।
2. मेघदूतम्–डॉ0 शिवराज शास्त्री।
3. मेघदूतम् में प्रकृति एवं श्रृङ्गार–प्रो0 शालिमा तबस्सुम, अभिषेक, प्रकाशन, दिल्ली।
4. नैषधीयमहाकाव्यम्–हरगोविन्द शास्त्री।

5. नैषधमहाकाव्य–डॉ0 शिवराज शास्त्री।
6. नैषधपरिशीलन–चण्डिका प्रसाद शुक्ल।
7. भारतीय संस्कृति का इतिहास–डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार।
8. भारतीय संस्कृति–नरेन्द्रदेव शास्त्री।
9. भारतीय संस्कृति के आधारतत्व–कृष्णकुमार।
10. हमारी प्राचीन संस्कृति–डॉ0 सत्यप्रकाश शास्त्री।
11. नैषधीयचरितम्–सुरेन्द्र देव शास्त्री, गोकुल दास संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी।

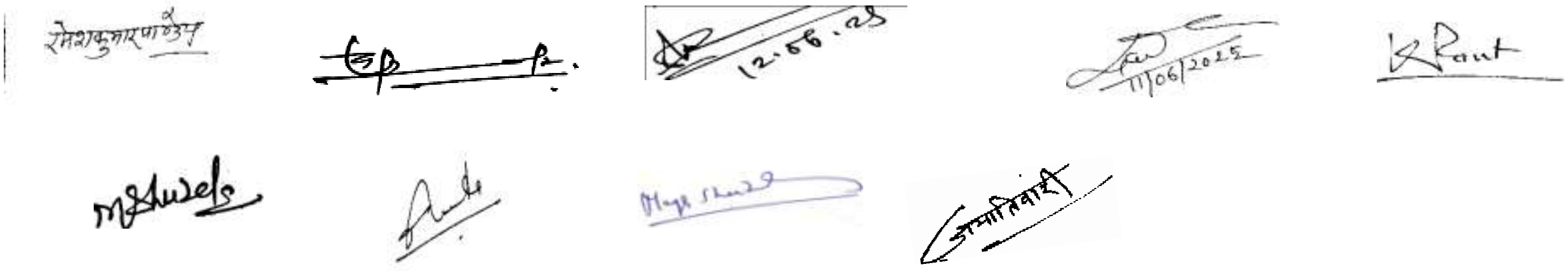

Group- I

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Electives	4	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme:- SANSKRIT		Year: IV	Semester: VIII Paper-DSE II
Course Code: DSE 8	Course Title:**वेदाङ्ग (निरुक्त, ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. शिक्षा एवं व्याकरण शास्त्रों के पारिभाषिक पदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. व्याकरण ग्रन्थों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
3. शिक्षा वेदाङ्ग की उपयोगिता को जान सकेंगे।
4. पाणिनीय–शिक्षा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
5. ऋक्प्रातिशाख्य के परिचय एवं महत्त्व से अवगत होगें।

Unit	**Topic**
Unit I	निरुक्त– अध्याय 1–2, पदों का चतुर्विध विभाजन एवं लक्षण, षड्भाव विकार, शब्द नित्यत्वानित्यत्वविचार, उपसर्गों के द्योतकत्व, वाचकत्व का सिद्धान्त, निपात की कोटियॉं, निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन, मन्त्रों की अर्थवत्ता, निर्वचन के सिद्धान्त एवं अधिकारी निरूपण।
Unit II	निर्वचन– निघण्टु , आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक् रात्रि, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर। अध्याय सात– त्रिविधा ऋचः, अनादिष्टदैवत मन्त्र, छन्दांसि, पृथिवी स्थानीय देवता वर्णन।
Unit III	पाणिनीय शिक्षा– 1–30 कारिकाऍं।
Unit IV	पाणिनीय शिक्षा– 31 से अन्त तक कारिकाएँ।
Unit V	ऋक्प्रातिशाख्यः परिभाषाएँ– समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य।

Suggested Reading:

1. न्यू वैदिक सलेक्शन–भाग 1 एवं 2–वाराणसी भारतीय विद्या प्रकाशन।
2. हिन्दी निरुक्त–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
3. प्रातिशाख्यों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ0 इन्द्रा ,वाराणसी।
4. पाणिनीय शिक्षा–रुद्रप्रसाद अवस्थी।
5. पाणिनीय शिक्षा–प्रो0 श्रीनारायण मिश्र।

6. वैदिक साहित्य का इतिहास—डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
7. यास्ककृत निरुक्त— सम्पादक—उमाशंकर ऋषि।
8. ऋक्प्रातिशाख्य—एक परिशीलन—डॉ0 वीरेन्द्र कुमार वर्मा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शोध संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी।

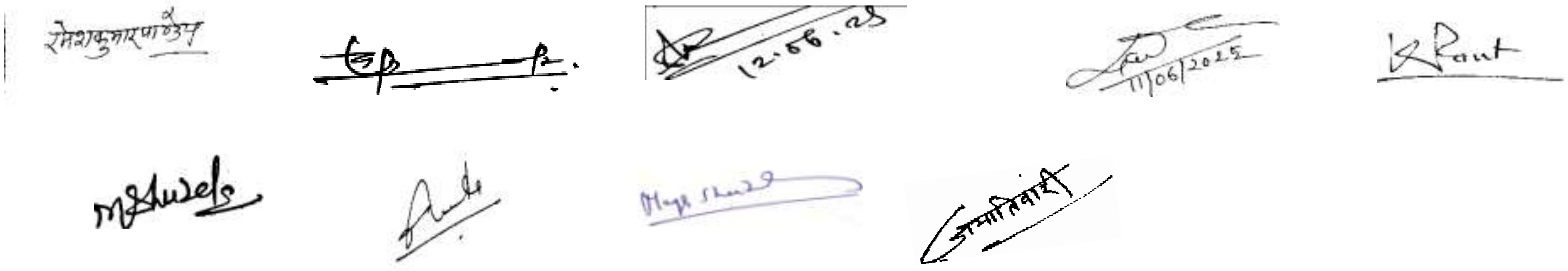

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Electives	4	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester:VIII Paper- DSE III
Course Code: DSE 9	Course Title: **वाक्यपदीय एवं भाषाविज्ञान**	

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. वाक्यपदीय में भर्तृहरि के भाषा (वाक्) की प्रकृति और उसका वाह्य जगत् से सम्बन्ध की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. वाक्यपदीय में दार्शनिक रीतियों के विषयों जैसे–जाति, द्रव्य, काल आदि से सुपरिचित होंगे।
3. भाषाविज्ञान के स्वरूप, उद्गम एवं विकास से सुपरिचित होगे।
4. ध्वनि विज्ञान, वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

Unit	Topic
Unit I	वाक्यपदीयम्– भर्तृहरि, 1–75 कारिकाएँ।
Unit II	वाक्यपदीयम्– भर्तृहरि, 76–156 कारिकाएँ।
Unit III	भाषाविज्ञान का परिचय, भाषा वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं परिवारमूलक) अवेस्ता, वैदिक एवं लौकिक संस्कृत।
Unit IV	ध्वनि विज्ञान (नियम, दिशाएॅ एवं कारण) पद विज्ञान।
Unit V	वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान (दिशाएँ एवं कारण)।

Suggested Reading:

1. वाक्यपदीयम्–भर्तृहरि।
2. अभिनव प्राकृत प्रकाश–नेमिचन्द्र शास्त्री।
3. संस्कृत भाषा विज्ञान–राजकिशोर सिंह।
4. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. भाषा विज्ञान–डॉ0 भोलानाथ तिवारी– इलाहाबाद किताब महल।
6. भाषा विज्ञान–डॉ0 कर्णसिंह– साहित्य भण्डार सुभाष बाजार मेरठ।

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Electives	4	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester:VIII Paper- DSE IV
Course Code: DSE 10	Course Title: **मीमांसा एवं वेदान्त**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी वेद–वेदांग आदि सभी शास्त्रों से सुपरिचित होगे।
2. वेदान्त–दर्शन का ऐतिहासिक स्वरूप से सुपरिचित होंगे।
3. दर्शनशास्त्र के इतिहास के माध्यम से सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदान्त से सुपरिचित होंगे।
4. दर्शनशास्त्र के आधार पर आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन से सुपरिचित होंगे।

Unit	**Topic**
Unit I	अर्थसंग्रह– धर्म, भावना, विधि (गुण, विशिष्ट, उत्पत्ति, विनियोग, प्रयोग एवं अधिकार) ।
Unit II	अर्थसंग्रह– मन्त्र, नामधेय, निषेद, अर्थवाद (अपूर्व, नियम एवं परिसंख्या विधि)।
Unit III	वेदान्तसार– प्रारम्भ से सृष्टि प्रक्रिया।
Unit IV	वेदान्तसार– विशिष्ट अध्यारोप से समाप्ति पर्यन्त।
Unit V	मीमांसा–दर्शन एवं वेदान्त–दर्शन का इतिहास।

Suggested Reading:

1. वेदान्तसार–रामशरण त्रिपाठी।
2. वेदान्तसार–राममूर्ति शर्मा।
3. वेदान्तसार–महेशचन्द्र भारतीय।
4. भारतीय दर्शन–बलदेव उपाध्याय।
5. भारतीय दर्शन–उमेश मिश्र।
6. भारतीय दर्शन–दत्त एवं चटर्जी।
7. Indian Philosophy- Das Gupta .

अथवा

Group- II

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Electives	4	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester:VIII Paper-DSE II
Course Code: DSE 8	Course Title: **वेदाङ्ग (निरुक्त, ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)**	

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. शिक्षा एवं व्याकरण शास्त्रों के पारिभाषिक पदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. व्याकरण ग्रन्थों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
3. शिक्षा वेदाङ्ग की उपयोगिता को जान सकेंगे।
4. पाणिनीय–शिक्षा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
5. ऋक्प्रातिशाख्य के परिचय एवं महत्त्व से अवगत होगें।

Unit	**Topic**
Unit I	निरुक्त– अध्याय 1–2, पदों का चतुर्विध विभाजन एवं लक्षण, षड्भाव विकार, शब्द नित्यत्वानित्यत्वविचार, उपसर्गों के द्योतकत्व, वाचकत्व का सिद्धान्त, निपात की कोटियॉ, निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन, मन्त्रों की अर्थवत्ता, निर्वचन के सिद्धान्त एवं अधिकारी निरूपण।
Unit II	निर्वचन– निघण्टु , आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक् , रात्रि, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर। अध्याय सात– त्रिविधा ऋचः, अनादिष्टदैवत मन्त्र, छन्दांसि, पृथिवी स्थानीय देवता वर्णन।
Unit III	पाणिनीय शिक्षा– 1–30 कारिकाएँ।
Unit IV	पाणिनीय शिक्षा– 31 से अन्त तक कारिकाएँ।
Unit V	ऋक्प्रातिशाख्यः परिभाषाएँ– समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य।

Suggested Reading:

1. न्यू वैदिक सलेक्शन–भाग 1 एवं 2–वाराणसी भारतीय विद्या प्रकाशन।
2. हिन्दी निरुक्त–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
3. प्रातिशाख्यों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का आलोचनात्मक अध्ययन–डॉ0 इन्द्रा,वाराणसी।

4. पाणिनीय शिक्षा–रुद्रप्रसाद अवस्थी।
5. पाणिनीय शिक्षा–प्रो0 श्रीनारायण मिश्र।
6. वैदिक साहित्य का इतिहास–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
7. यास्ककृत निरुक्त–सम्पादक–उमाशंकर ऋषि, वाराणसी, चौखम्बाविद्याा भवन।
8. ऋक्प्रातिशाख्य–एक परिशीलन–डॉ0 वीरेन्द्र कुमार वर्मा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शोध संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी।

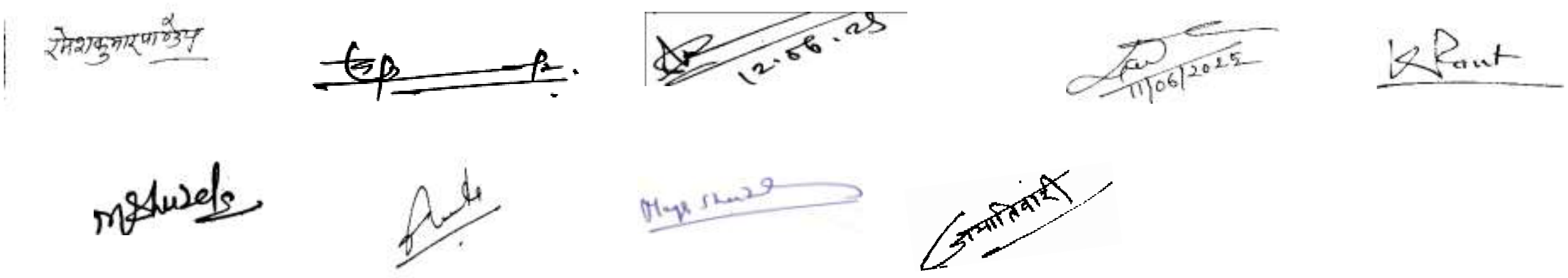

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Electives	4	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme:- SANSKRIT		Year: IV	Semester:VIII Paper-DSE III
Course Code: DSE 9	Course Title:**वाक्यपदीय एवं भाषाविज्ञान**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. वाक्यपदीय में भर्तृहरि के भाषा (वाक्) की प्रकृति और उसका वाह्य जगत् से सम्बन्ध की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. वाक्यपदीय में दार्शनिक रीतियों के विषयों जैसे–जाति, द्रव्य, काल आदि से सुपरिचित होंगे।
3. भाषाविज्ञान के स्वरूप, उद्‌गम एवं विकास से सुपरिचित होगे।
4. ध्वनि विज्ञान, वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

Unit	**Topic**
Unit I	वाक्यपदीयम्– भर्तृहरि, 1–75 कारिकाएँ।
Unit II	वाक्यपदीयम्– भर्तृहरि, 76–156 कारिकाएँ।
Unit III	भाषाविज्ञान का परिचय, भाषा वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं परिवारमूलक) अवेस्ता वैदिक एवं लौकिक संस्कृत।
Unit IV	ध्वनि विज्ञान (नियम, दिशाएँ एवं कारण) पद विज्ञान।
Unit V	वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान (दिशाएँ एवं कारण)।

Suggested Reading:

1. वाक्यपदीयम्–भर्तृहरि।
2. अभिनव प्राकृत प्रकाश–नेमिचन्द्र शास्त्री।
3. संस्कृत भाषा विज्ञान–राजकिशोर सिंह।
4. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
5. भाषा विज्ञान–डॉ0 भोलानाथ तिवारी–इलाहाबाद किताब महल।
6. भाषा विज्ञान–डॉ0 कर्णसिंह–साहित्य भण्डार सुभाष बाजार मेरठ।

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
General Electives	4	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme:-SANSKRIT		Year: IV	Semester: VIII Paper- GE II
Course Code: GE 9	Course Title:**उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार**		

Unit	Topic
Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि 1. उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्य से सुपरिचित होंगे। 2. उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्यकारों से सुपरिचित होंगे। 3. उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्य के विविध आयामों से परिचित होंगे। 4. उत्तराखण्ड की संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं से सुपरिचित होंगे।	
Unit	**Topic**
Unit I	उत्तराखण्ड के 19 वीं शताब्दी के संस्कृतसाहित्यकार–परिचय।
Unit II	उत्तराखण्ड के 20वीं शताब्दी से लेकर अद्यतन के संस्कृतसाहित्यकार–परिचय।
Unit III	उत्तराखण्ड में प्रकाशित संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं का महत्त्व।
Unit IV	उत्तराखण्ड–संस्कृतसाहित्य की विधाओं का परिचय।

Suggested Reading:

1. आधुनिक संस्कृतसाहित्य का इतिहास–पद्मभूषणपं0 बलदेव उपाध्याय।
2. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास–सप्तम खण्ड–सम्पादक डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
3. आधुनिक संस्कृत नाटक–रामजी उपाध्याय।
4. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
5. संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–पद्मश्री कपिल देव द्विवेदी,संस्कृतसाहित्य संस्थान,37 कचेहरि मार्ग इलाहाबाद।
6. साहित्यविमर्श–प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी।
7. संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास–प्रो0 राधबल्लभ त्रिपाठी, सागर विश्वविद्याालय प्रकाशन।

8. विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
9. अभिराजयशोभूषण्म्–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
10. उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार अतीत से वर्तमान–प्रो0 शालिमा तबस्सुम, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली।

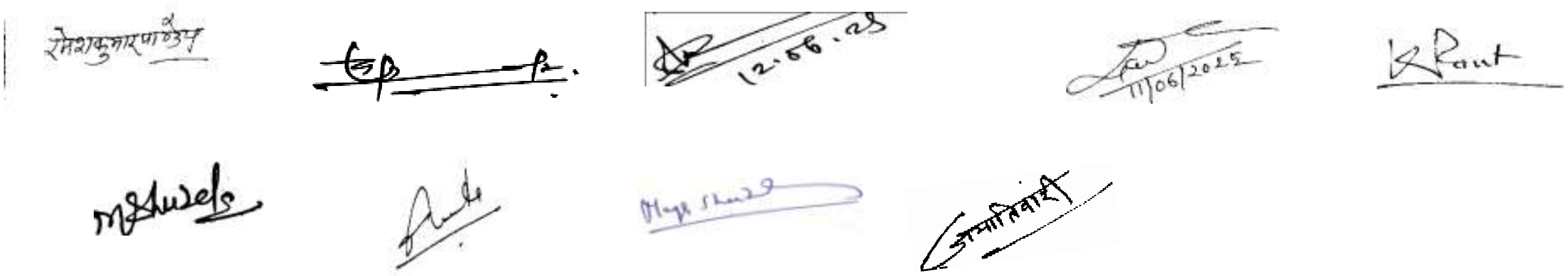

Group- III

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Electives	4	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester:VIII Paper- DSE II
Course Code: DSE 8	Course Title: **वेदाङ्ग (निरुक्त, ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. शिक्षा एवं व्याकरण शास्त्रों के पारिभाषिक पदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. व्याकरण ग्रन्थों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
3. शिक्षा वेदाङ्ग की उपयोगिता को जान सकेंगे।
4. पाणिनीय–शिक्षा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
5. ऋक्प्रातिशाख्य के परिचय एवं महत्त्व से अवगत होगें।

Unit	Topic
Unit I	निरुक्त– अध्याय 1–2, पदों का चतुर्विध विभाजन एवं लक्षण, षड्भाव विकार, शब्द नित्यत्वानित्यत्वविचार, उपसर्गों के द्योतकत्व, वाचकत्व का सिद्धान्त, निपात की कोटियाँ, निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन, मन्त्रों की अर्थवत्ता, निर्वचन के सिद्धान्त एवं अधिकारी निरूपण।
Unit II	निर्वचन– निघण्टु , आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक् , रात्रि, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर। अध्याय सात– त्रिविधा ऋचः, अनादिष्टदैवत मन्त्र, छन्दांसि, पृथिवी स्थानीय देवता वर्णन।
Unit III	पाणिनीय शिक्षा–01–30 कारिकाएँ।
Unit IV	पाणिनीय शिक्षा– 31 से अन्त तक कारिकाएँ।
Unit V	ऋक्प्रातिशाख्यः परिभाषाएँ– समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य।

Suggested Reading:

1. न्यू वैदिक सलेक्शन–भाग 1 एवं 2–वाराणसी भारतीय विद्या प्रकाशन।
2. हिन्दी निरुक्त–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
3. प्रातिशाख्यों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ0 इन्द्रा ,वाराणसी।

4. पाणिनीय शिक्षा–रुद्रप्रसाद अवस्थी।
5. पाणिनीय शिक्षा–प्रो0 श्रीनारायण मिश्र
6. वैदिक साहित्य का इतिहास–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
7. यास्ककृत निरुक्त– सम्पादक–उमाशंकर ऋषि।
8. ऋक्प्रातिशाख्य–एक परिशीलन–डॉ0 वीरेन्द्र कुमार वर्मा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शोध संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी।

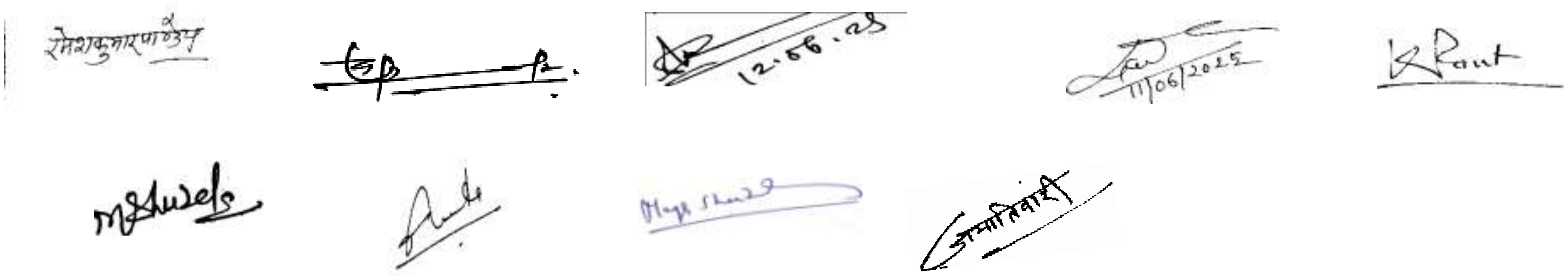

अथवा

Group- III

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
General Electives	4	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester: VIII Paper- GE III
Course Code: GE 9	Course Title:**उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार**	

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि	
1. उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्य से सुपरिचित होंगे। 2. उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्यकारों से सुपरिचित होंगे। 3. उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्य के विविध आयामों से परिचित होंगे। 4. उत्तराखण्ड की संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं से सुपरिचित होंगे।	
Unit	**Topic**
Unit I	उत्तराखण्ड के 19 वीं शताब्दी के संस्कृतसाहित्यकार–परिचय।
Unit II	उत्तराखण्ड के 20वीं शताब्दी से लेकर अद्यतन के संस्कृतसाहित्यकार–परिचय।
Unit III	उत्तराखण्ड–संस्कृतसाहित्य की विधाओं का परिचय।
Unit IV	उत्तराखण्ड में प्रकाशित संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं का परिचय एवं महत्त्व।

Suggested Reading:

1. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास–पद्मभूषणपं0 बलदेव उपाध्याय।
2. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास–सप्तम खण्ड–सम्पादक डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
3. आधुनिक संस्कृत नाटक–रामजी उपाध्याय।
4. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
5. काव्यालंकारकारिका–प्रोफेसर रेवाप्रसाद द्विवेदी।
6. साहित्यविमर्श–प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी।
7. संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास–प्रो0 राधबल्लभ त्रिपाठी।

8. विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
9. अभिराजयशोभूषण्म्–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
10. उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार अतीत से वर्तमान–प्रो0 शालिमा तबस्सुम, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली।

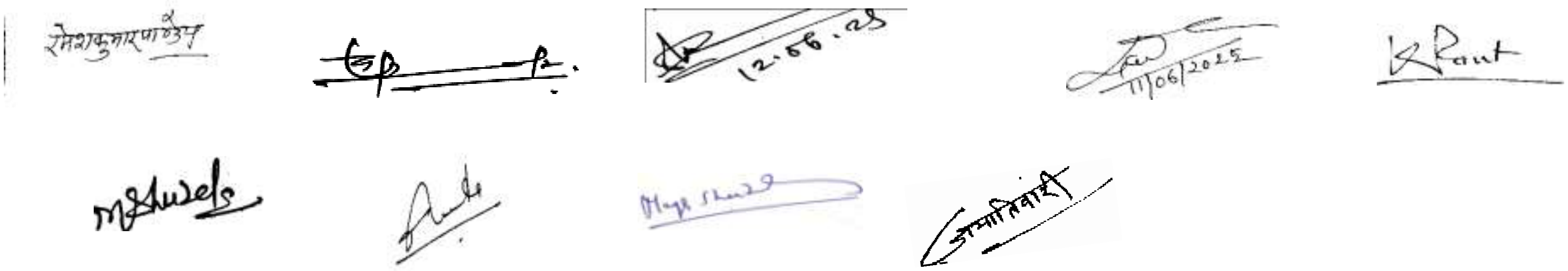

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
General Electives	4	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme:-SANSKRIT	Year: IV	Semester: VIII Paper- GE IV
Course Code: GE 10	Course Title: **आर्षकाव्य–महाभारत**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. महाभारत का सामान्य परिचय एवं नैतिक शिक्षा को जान सकेंगे।
2. महाभारत में निहित सामाजिक चेतना की शिक्षा से अवगत हो सकेंगे।
3. विद्यार्थी भारतीय पौराणिक कथाओं में निहित शिक्षा से सुपरिचित होगें।
4. महाभारत की कथा में वर्णित धर्मशास्त्र की सभी सत्य की शिक्षा से विद्यार्थी अवगत होगें।

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0

Unit	**Topic**
Unit I	महर्षिव्यास एवं महाभारतग्रन्थ का परिचय।
Unit II	महाभारत के पर्वों का संक्षिप्त परिचय।
Unit III	महाभारत का माहात्म्य एवं प्रमुख पात्रों के चरित्र से प्राप्त शिक्षा।।
Unit IV	महाभारत में वर्णित विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का अर्थ एवं महत्त्व।

Suggested Reading:

1. सम्पूर्णमहाभारत छःभागों में–साहित्याचार्य पण्डित रामनारायण दत्त शास्त्री पाण्डे; ''राम'' गीताप्रेस गोरखपुर सं0 2070।
2. महाभारत–श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्यायमण्डल।
3. महाभारत का अर्थ,डी0डी0–हर्ष, वाग्देवी प्रकाशन वीकानेर 2014।
4. संस्कृत–वाङ्मय का बृहद् इतिहास–आर्षकाव्य, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
5. संस्कृत–साहित्य का इतिहास–पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय।उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
6. महाभारत में श्रीकृष्ण का विलक्षण व्यक्तित्व–डॉ0 भुवन चन्द्र पाठक।

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
IAPC	6	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme:-SANSKRIT	Year: IV	Semester: VIII Paper- IAPC
Course Code: IAPC 2	Course Title: **अथर्ववेद एवं आयुर्वेद चिकित्सा**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. अथर्ववेदीय चिकित्सा से सुपरिचित होंगे।
2. अथर्ववेद में वर्णित औषधियों का ज्ञान प्राप्त होगे।
3. चिकित्सा एवं वनस्पतिशास्त्र के माध्यम से सह–अध्ययन संदृष्टि का विकास होगा।
4. आयुर्वेद साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त होगा।
5. आयुर्वेदीय अष्टांग–चिकित्सा से सुपरिचित होंगे।

Unit	**Topic**
Unit I	अथर्ववेद का सामान्य परिचय एवं अथर्ववेद में चिकित्सा।
Unit II	अथर्ववेद में औषधिविज्ञान।
Unit III	आयुर्वेद का सामान्य परिचय एवं महत्त्व।
Unit IV	आयुर्वेद में अष्टांग चिकित्सा परिचय एवं उपयोगिता।
Unit V	अथर्ववेद एवं आयुर्वेद में पथ्यापथ्य विमर्श–एक अध्ययन।
Unit VI	औषधिविज्ञान एवं आयुर्वेद–चिकित्सा में शोधकार्यों का सर्वेक्षण एवं शोधप्रविधि के अनुसार शोधकार्य।

Suggested Reading:

1. अथर्ववेद में चिकित्सा एवम् ओषधि–विज्ञान–डॉ0 शलिनी शुक्ला, अक्षयवट प्रकाशन, प्रयागराज।
2. अथर्ववेद का सुबोधभाष्य–श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल पारडी, गुजरात।
3. आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास–आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चौखम्बा ओरण्टलिया, वाराणसी।
4. आयुर्वेद का प्रारम्भिक इतिहास–प्रो0 वनवारी लाल गौड़, राम आयुर्वेद संस्कृत बुक प्रतिष्ठान, दिल्ली।

5. द्रव्यगुण विज्ञान–आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चौखम्बा सुरभारती अकादमी, वाराणसी।
6. वेदामृतम्–सुखी जीवन–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।
7. आयुर्वेद परिभाषा कोश–वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार।
8. वेदों में आयुर्वेद–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।
9.अथर्ववेद–विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान– होशियारपुर।

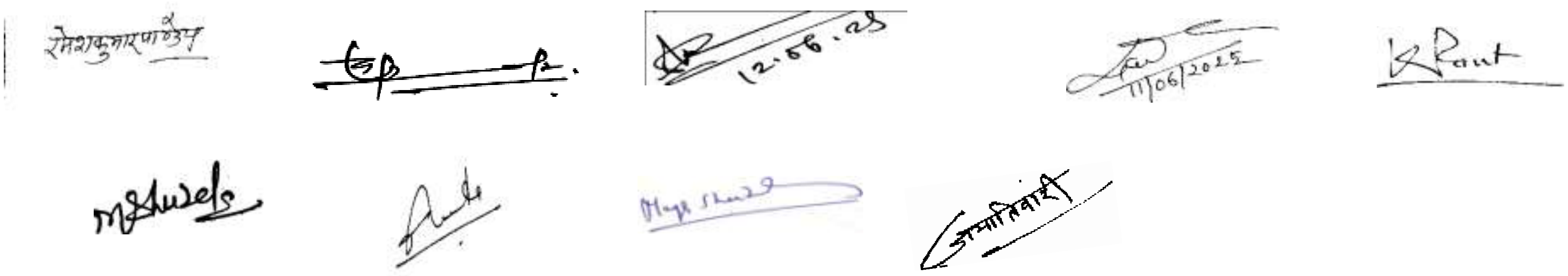

अथवा

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
IAPC	6	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT			
Programme:-SANSKRIT		Year: IV	Semester: VIII Paper- IAPC
Course Code: IAPC 2	Course Title: **संस्कृतसाहित्य में वर्णित समाज**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. संस्कृत साहित्य से परिचय प्राप्त होगा।
2. संस्कृत साहित्य की अनेक विशेषताओं से अवगत होंगें।
3. संस्कृत साहित्य में वर्णित समाज के अध्ययन से विद्यार्थी सामाजिक गतिविधियों से एवं संस्कारों से परिचित होंगे।

Unit	Topic
Unit I	संस्कृतवाङ्मय का संक्षिप्त परिचय एवं क्रमिक विकास।
Unit II	संस्कृत साहित्य में वर्णित भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ।
Unit III	सामाजिक तत्त्वों का विश्लेषण एवं महत्त्व।
Unit IV	पारिवारिक एवं सामाजिक तत्त्वों का तुलनात्मक विश्लेषण।
Unit V	पर्यावरण के क्षेत्र में संस्कृत एवं समाज का योगदान।
Unit VI	राष्ट्र के विकास में समाज का योगदान एवं पूर्व में किये गये शोधकार्यों का सर्वेक्षण एवं शोधप्रविधि के अनुसार शोधकार्य।

Suggested Reading:

1. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य संस्थान, इलाहाबाद।
2. भारतीय संस्कृति–प्रो0 किरण टण्डन, ईस्टर्न बुक लिंकर्स ,दिल्ली।
3. वेदामृतम्–सुखी समाज–पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।
4. कालिदास ग्रन्थावली–चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी ।
5. वेदकालीन समाज–डॉ0 शिवदत्त ज्ञानी,चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी।

6. श्रीमद्रामायण–महर्षिवाल्मीकि प्रणीत गीता प्रेस गोरखपुर।
7. श्रीमद्महाभारत–महर्षि वेद व्यास प्रणीत गीता प्रेस गोरखपुर प्रथम संस्करण।
8. वैदिक साहित्य और संस्कृति–पद्मविभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय–काशी शारदा मन्दिर।
9. वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और शिक्षाशास्त्र–पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।
10. भारतीय समाज व्यवस्था–राम आहूजा रावत,पब्लिकेशन जयपुर, नयी दिल्ली।
11. भारतीय समाज का स्वरूप–डॉ0 सीताराम झा,बिहार हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी,पटना।
12. वैदिकवाङ्मय के अनुसन्धेय पक्ष–प्रो0 हरीश्वर दीक्षित,प्रकाशकविश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।

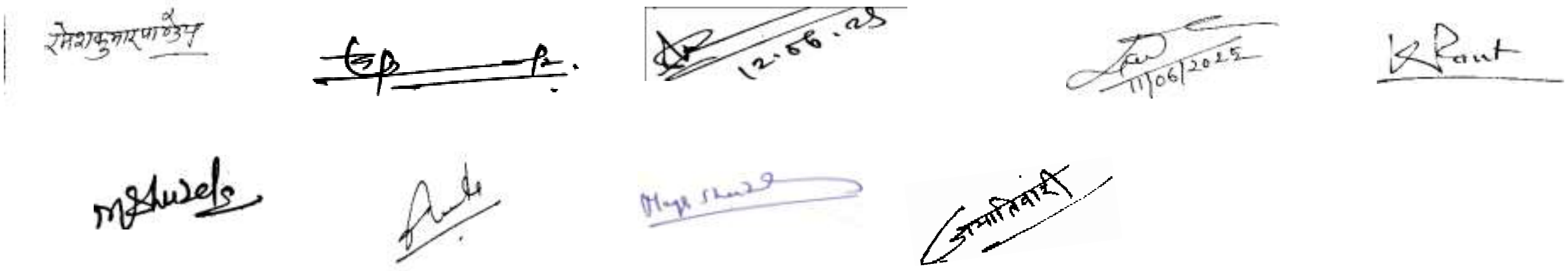

अथवा

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
IAPC	6	3	1	0		Nil

PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT		
Programme:- SANSKRIT	Year: IV	Semester: VIII Paper- IAPC
Course Code: IAPC 2	Course Title: **भारतीय शिक्षा व्यवस्था : प्रासंगिकता**	

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

वैदिकवाङ्मय से लेकर लौकिकसाहित्य में भारतीयशिक्षा व्यवस्था के अनेक उदाहरण द्रष्टव्य है, जिनके अवलोकन एवं अध्ययन से विद्यार्थी प्राचीन शिक्षा व्यवस्था से सुपरिचित होंगे। भारतीय शिक्षा व्यवस्था को वर्तमान की शिक्षा व्यवस्था से सामंजस्य करते हुए समाज का एवं देश का विकास करने में सक्षम होंगे। साथ ही हमारे भारतीय शिक्षा व्यवस्था रूपी धरोहर को अग्रेसित करने में सफल होंगे।

Unit	**Topic**
Unit I	भारतीय शिक्षाव्यवस्था की परम्परा एवं महत्त्व।
Unit II	वैदिककालीन शिक्षाव्यवस्था।
Unit III	रामायणकालीन शिक्षाव्यवस्था।
Unit IV	महाभारतकालीन मध्यकालीन शिक्षाव्यवस्था।
Unit V	आधुनिक शिक्षाव्यवस्था ।
Unit VI	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षाव्यवस्था की प्रासंगिकता।

Suggested Reading:

1. प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास–ए0एल0 बाशम– अद्भूत भारत सहाय स्वरूप– मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
2. हिन्दू संस्कार–राजबली पाण्डे–मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
3. संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास–पद्मविभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी लखनऊ।
4. कालिदास ग्रन्थावली–चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी ।

5. रामायण–महर्षि वाल्मीकिकृत–गीता प्रेस, गोरखपुर।
6. महाभारत–महर्षि वेदव्यासकृत–गीता प्रेस, गोरखपुर।
7. वैदिक शिक्षा पद्धति–डॉ0 भास्कर मिश्र, महर्षि सान्दीपनि वेदविद्याा प्रतिष्ठान, उज्जैन।
8. भारतीय संस्कृति–प्रो0 किरण टण्डन, ईस्टर्न बुक लिंकस,दिल्ली।
9. शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता– राजकीय रजा कालेज, रामपुर।
10. वैदिकवाङ्मय के अनुसन्धेय पक्ष–प्रो0 हरीश्वर दीक्षित, प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।